

भारत के लिये शंघाई सहयोग संगठन के मायने

संदर्भ

9-10 जून, 2018 को भारत चीन के कगिदाओ में आयोजित हो रहे शंघाई सहयोग संगठन के सम्मेलन में पूर्ण सदस्य के रूप में भाग ले रहा है। समरणीय है कि भारत और पाकस्तान को पछिले वर्ष कजाकस्तान के अस्ताना में संपन्न हुए संगठन के 17वें शिखर सम्मेलन में पूर्ण सदस्य का दर्जा प्रदान किया गया था।

प्रमुख बिंदु

- जून 2009 में रूस के येकातेरिनबर्ग में आयोजित हुए शंघाई सहयोग संगठन के वार्षिक सम्मेलन में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सहि ने पाकस्तान के राष्ट्रपति आसफि अली ज़रदारी को कड़ा संदेश देते हुए कहा था कि पाकस्तान की धरती का इस्तेमाल भारत के वरिद्ध आतंकवादी गतिविधियों के संचालन हेतु नहीं किया जाना चाहिये।
- उस समय भारत और पाकस्तान दोनों देश संगठन में पर्यवेक्षक के तौर पर शामिल थे, लेकिन भारत ने उस समय पहली बार संगठन में शामिल होने में अपनी रुचि व्यक्त की थी और भारतीय प्रधानमंत्री उस सम्मेलन में शामिल हुए थे।
- तब से लेकर अब तक वैश्विक राजनीति में बहुत सारे बड़े बदलाव आ चुके हैं। यथा-
 - ◆ अमेरिका ने ईरान के साथ हुई न्यूकलियर डील से खुद को अलग कर लिया है, जबकि चीन, रूस और डील में शामिल अन्य यूरोपीय देश इसमें बने हुए हैं।
 - ◆ लगभग ढाई महीने तक चले डोकलाम गतिरिध के बाद भारत और चीन ने फरि से संबंधों को सुधारने का प्रयास किया और भारतीय प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति के मध्य चीन के वुहान में एक अनौपचारिक सम्मेलन आयोजित किया गया।
 - ◆ भारतीय प्रधानमंत्री ने इजरायल और फिलिस्तीन की यात्रा संपन्न की।
 - ◆ भारत ने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मलिकर क्वाड को पुनर्जीवित किया।
 - ◆ कगिदाओ में चल रहे सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के समक्ष यहाँ कई चुनौतियाँ भी होंगी और अवसर भी उपस्थित होंगे।
 - ◆ यह सम्मेलन भारत और पाकस्तान के शीर्ष नेतृत्व को सम्मेलन से इतर अनौपचारिक रूप से मिलने का अवसर प्रदान करेगा।
 - ◆ दोनों देशों को अपने द्विपक्षीय विवादों को कनियारे रखकर पारस्परिक हित के मुद्दों पर सहयोग करना होगा।
 - ◆ वुहान में हुई वार्ता के पश्चात् यह सम्मेलन भारत और चीन के शीर्ष नेताओं को वार्ता करने और मिलने का अवसर प्रदान करेगा।
 - ◆ कगिदाओ सम्मेलन चीन के लिये अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने और मजबूत करने का एक अच्छा अवसर हो सकता है।
 - ◆ एससीओ में प्रवेश कराने में रूस भारत का सबसे बड़ा समर्थक रहा है। रूस ने भारत को संगठन में प्रवेश दिलाने के लिये चीन पर नरितर दबाव डाला। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादमिरि पुतिन के मध्य पछिले माह रूस के सोची शहर में एक अनौपचारिक वार्ता संपन्न हुई थी। दोनों नेता इस वार्ता को भी एससीओ सम्मेलन के इतर जारी रखना चाहेंगे।
 - ◆ भारत पहले ही यह साफ कर चुका है कि रूस के साथ भारत के संबंध पश्चिमी जगत के रूस के प्रति अपनाए जा रहे रवैये के कारण प्रभावित नहीं होंगे।
 - ◆ भारत का इसी प्रकार का दृष्टिकोण ईरान के लिये भी रहने की उम्मीद है, जो कि संगठन में एक पर्यवेक्षक राज्य के तौर पर शामिल है और संगठन की पूर्ण सदस्यता के लिये आवेदन कर चुका है।
 - ◆ इस सम्मेलन के दौरान ही भारतीय प्रधानमंत्री ईरान के शीर्ष नेतृत्व के साथ भी वार्ता कर सकते हैं। ध्यातव्य है कि भारत का ईरान के चाबहार बंदरगाह के साथ बड़ा राजनीतिक हित जुड़ा हुआ है।
 - ◆ शंघाई स्परिटि, जो कि एससीओ की प्रमुख विचारधारा है, सद्भाव, सर्व सम्मति, दूसरी संस्कृतियों का सम्मान, दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना और गुटनरिपेक्षता पर जोर देती है।
 - ◆ वास्तव में शंघाई सम्मेलन भारत को उस प्रकार की शक्ति के प्रदर्शन का अवसर प्रदान करता है, जैसा भारत चाहता है।

शंघाई सहयोग संगठन

- शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) एक यूरेशियन राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संगठन है, जिसकी स्थापना चीन, कजाकस्तान, करिगस्तान, रूस, ताजकिस्तान और उज़्बेकस्तान के नेताओं द्वारा 15 जून, 2001 को शंघाई (चीन) में की गई थी।
- उज़्बेकस्तान को छोड़कर बाकी देश 26 अप्रैल 1996 में स्थापित 'शंघाई पाँच' समूह के सदस्य हैं।
- भारत और पाकस्तान को वर्ष 2017 में इस संगठन के पूर्ण सदस्य का दर्जा प्रदान किया गया।
- 2005 से भारत और पाकस्तान इस संगठन में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल थे।

